प्रो.पुष्पा महाराज
हिन्दी विभाग
सेमेस्टर VI (MJC 10)

जनेन्द्र **की कहानी "पाजेब" : विस्तृत विश्लेषण**

हिंदी के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कथाकार **जैनेंद्र कुमार** ने अपनी कहानियों में बाहरी घटनाओं की अपेक्षा मनुष्य के अंतर्मन को अधिक महत्व दिया है। उनकी कहानी **"पाजेब"** इसी प्रवृत्ति की प्रतिनिधि कहानी है। यह एक साधारण घरेलू घटना पर आधारित होते हुए भी गहरी मानवीय संवेदना और बाल-मनोविज्ञान को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है।

1. कथानक का स्वरूप

कहानी का कथानक अत्यंत छोटा और सरल है। एक छोटी बच्ची अपनी पाजेब से बहुत प्रेम करती है। वह उसके लिए केवल गहना नहीं, बल्कि खुशी और अपनापन का प्रतीक है। एक दिन उसकी पाजेब खो जाती है।

पाजेब खोने के बाद बच्ची बहुत दुखी हो जाती है। वह रोती है, बेचैन रहती है और उसकी दुनिया जैसे सूनी हो जाती है। घर के लोग उसे समझाने का प्रयास करते हैं, नई पाजेब दिलाने की बात भी कहते हैं, पर बच्ची नहीं मानती।

अंततः खोज-बीन के बाद पाजेब मिल जाती है। जैसे ही बच्ची को पाजेब मिलती है, उसका चेहरा खिल उठता है और घर का वातावरण भी प्रसन्न हो जाता है।

इस छोटी-सी घटना के माध्यम से लेखक ने मनुष्य के भावनात्मक संसार को बहुत गहराई से प्रस्तुत किया है।

———

2. बाल-मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण

इस कहानी की सबसे बड़ी विशेषता इसका **बाल-मनोविज्ञान** है।

- बच्ची के लिए पाजेब केवल धातु का आभूषण नहीं है।
- वह उसके बचपन की खुशी, खेल और पहचान से जुड़ी है।
- इसलिए उसका खोना, उसके लिए किसी बड़े नुकसान जैसा है।

लेखक यह दिखाते हैं कि बच्चे वस्तुओं से नहीं, उनसे जुड़ी भावनाओं से बंधे होते हैं। बड़े लोग अक्सर इसे समझ नहीं पाते और सोचते हैं कि "नई चीज़ दिला देंगे तो बात खत्म।" परंतु बच्चे के लिए वह वही चीज़ होनी चाहिए,

क्योंकि उसमें उसकी स्मृतियाँ और लगाव जुड़ा होता है।

3. पारिवारिक संवेदना का चित्रण

कहानी में परिवार का वात्सल्यपूर्ण वातावरण भी दिखाई देता है।

- घर के लोग बच्ची के दुख से परेशान हो जाते हैं।
- वे उसे बहलाने-फुसलाने की कोशिश करते हैं।
- पाजेब ढूँढ़ने में सभी लग जाते हैं।

यह दर्शाता है कि परिवार केवल संबंधों का समूह नहीं, बल्कि भावनात्मक एकता का स्थान है। बच्ची की खुशी पूरे घर की खुशी बन जाती है।

4. छोटी घटना, बड़ा अर्थ

जैनेंद्र जी की शैली का महत्वपूर्ण गुण है कि वे बहुत छोटी घटना से गहरा अर्थ निकालते हैं।

"पाजेब" में भी कोई बड़ी सामाजिक समस्या या नाटकीय घटना नहीं है। फिर भी कहानी प्रभावशाली है क्योंकि यह मनुष्य के भीतर की संवेदनाओं को सामने लाती है।

यह कहानी हमें सिखाती है कि साहित्य का उद्देश्य केवल बड़ी घटनाएँ दिखाना नहीं, बल्कि जीवन के सूक्ष्म अनुभवों को समझना भी है।

5. प्रतीकात्मकता

कहानी में **पाजेब** केवल आभूषण नहीं, बल्कि प्रतीक है—

- बचपन की निश्छलता का
- लगाव और स्मृति का
- आत्मीयता का
- भावनात्मक सुरक्षा का

जब पाजेब खोती है, बच्ची का भावनात्मक संतुलन भी टूट जाता है। जब वह मिलती है, तो उसका आत्मविश्वास और खुशी लौट आती है।

इस प्रकार पाजेब, मनुष्य के जीवन में भावनात्मक संबंधों के महत्व का प्रतीक बन जाती है।

6. भाषा-शैली

कहानी की भाषा अत्यंत सरल, स्वाभाविक और बोलचाल के निकट है।

- कहीं भी जटिल शब्दावली नहीं
- संवाद छोटे और प्रभावी
- वर्णन संक्षिप्त लेकिन भावपूर्ण

यही कारण है कि कहानी पढ़ते समय पाठक सीधे उस वातावरण में पहुँच जाता है और बच्ची के दुख-सुख को महसूस करने लगता है।

7. जैनेंद्र की कथा-शैली का प्रतिनिधित्व

यह कहानी जैनेंद्र जी की कथा-कला के कई प्रमुख गुणों को दर्शाती है—

1. मनोवैज्ञानिक दृष्टि
2. सूक्ष्म संवेदनाओं का चित्रण
3. साधारण घटनाओं का चयन
4. अंतर्मुखी कथानक
5. भावनात्मक गहराई

इस दृष्टि से “पाजेब” उनकी प्रतिनिधि कहानियों में गिनी जाती है।

8. कहानी का संदेश

इस कहानी से हमें कई महत्वपूर्ण संदेश मिलते हैं—

- बच्चों की भावनाएँ बहुत कोमल होती हैं।
- उन्हें समझना और सम्मान देना चाहिए।
- छोटी चीजें भी किसी के लिए बहुत बड़ी हो सकती हैं।
- प्रेम और संवेदना ही परिवार की असली शक्ति है।

निष्कर्ष

“पाजेब” एक छोटी लेकिन अत्यंत प्रभावशाली कहानी है। इसमें न तो कोई बड़ी घटना है, न ही जटिल कथानक; फिर भी यह पाठक के मन को छू लेती है। जैनेंद्र कुमार ने बाल-मनोविज्ञान, पारिवारिक प्रेम और मानवीय संवेदनाओं को इतनी सहजता से चित्रित किया है कि यह कहानी लंबे समय तक स्मरण में बनी रहती है।

इस प्रकार “पाजेब” केवल एक बच्ची और उसकी पाजेब की कहानी नहीं, बल्कि मनुष्य के भावनात्मक संसार की मार्मिक अभिव्यक्ति है।